अध्याय 11: संस्कृति

विषय-सूची 2 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 11.1	प्रश्न-अभ्यास	8 प्रश्न
प्रश्नावली 11.2	भाषा-अध्ययन	1 प्रश्न

प्रश्नावली 11.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

हल

लेखक भदंत आनंद कौसल्यायन के अनुसार 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ न बन पाने के कारण—
1. ये दोनों शब्द ऐसे हैं जिनका उपयोग सबसे अधिक होता है किंतु ये सबसे कम समझ में आते हैं। लेखक लिखते हैं: 'जो शब्द सबसे कम समझ में आते हैं और जिनका उपयोग होता है सबसे अधिक — ऐसे दो शब्द हैं सभ्यता और संस्कृति।'
2. जब इन दो शब्दों के साथ 'भौतिक-सभ्यता' और 'आध्यात्मिक-सभ्यता' जैसे अनेक विशेषण लग जाते हैं तो दोनों शब्दों का जो थोड़ा-बहुत अर्थ समझ में आया रहता है, वह भी गलत-सलत हो जाता है।
3. लोग यह तय नहीं कर पाते कि दोनों एक ही चीज हैं अथवा दो अलग-अलग वस्तुएँ हैं, और यदि दो हैं तो उनमें क्या अंतर है।
4. इस भ्रम के कारण लोग संस्कृति का बँटवारा करने लगते हैं — 'हिंदू संस्कृति', 'मुसलिम संस्कृति' आदि विभाजन करते हैं — जो लेखक की दृष्टि में आश्चर्यजनक और दुखद है।

उत्तर: लेखक के अनुसार इन शब्दों का उपयोग सर्वाधिक होता है किंतु ये सर्वाधिक कम समझे जाते हैं; इन पर 'भौतिक' और 'आध्यात्मिक' जैसे विशेषण लगाने से अर्थ और भी गलत-सलत हो जाता है, तथा लोग यह तय नहीं कर पाते कि ये एक हैं या दो अलग वस्तुएँ।

प्रश्न 2

आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

हल

आग की खोज एक महान खोज क्यों है—
लेखक के अनुसार जब मानव समाज का अग्नि देवता से साक्षात नहीं हुआ था, तब जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह बहुत बड़ा आविष्कर्ता रहा होगा। आग की खोज ने मानव जीवन को मूलभूत रूप से बदल दिया — खाना पकाना, ठंड से बचना, जंगली जानवरों से सुरक्षा आदि सब संभव हुए।
प्रेरणा के मुख्य स्रोत—
1. पेट की ज्वाला (भोजन की आवश्यकता): लेखक कहते हैं — 'आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही।' कच्चे भोजन की सीमाओं को पार करने की जरूरत ने आग खोजने की प्रेरणा दी होगी।

2. शीत से बचाव: ठंड से बचने की आवश्यकता भी एक महत्त्वपूर्ण भौतिक प्रेरणा रही होगी।
3. जन्मजात जिज्ञासा (ज्ञानेप्सा): मानव की सहज जिज्ञासा और नई खोज की प्रवृत्ति भी आग की खोज का आधार बनी होगी — जो 'संस्कृति' का मूल लक्षण है।

उत्तर: आग की खोज इसलिए महान है क्योंकि यह मानव इतिहास की सबसे पहली और क्रांतिकारी खोजों में से एक है। इसके पीछे मुख्य प्रेरणाएँ थीं — पेट की ज्वाला (भोजन-आवश्यकता), शीत से बचाव, तथा मानव की सहज जिज्ञासा एवं ज्ञानेप्सा।

प्रश्न 3

वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

हल

लेखक के अनुसार वास्तविक 'संस्कृत व्यक्ति' वह है जिसकी बुद्धि या विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया हो।
लेखक के शब्दों में: 'जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है।'
संस्कृत व्यक्ति में वह योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा होती है जिसके बल पर वह कोई नई खोज करता है। यह खोज भौतिक आवश्यकता (जैसे आग/सुई-धागे) से हो सकती है, ज्ञान की जिज्ञासा (जैसे तारों का अध्ययन) से हो सकती है, अथवा परहित की भावना (जैसे सिद्धार्थ का त्याग) से भी हो सकती है।
उसकी संतान जिसे वह वस्तु/खोज पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है, वह सभ्य तो बन सकती है किंतु संस्कृत नहीं — क्योंकि उसमें वह मौलिक खोज-शक्ति नहीं है।
सारांश में: नई खोज करने की मौलिक शक्ति या क्षमता रखने वाला व्यक्ति ही वास्तविक 'संस्कृत व्यक्ति' है।

उत्तर: वास्तविक 'संस्कृत व्यक्ति' वह है जिसकी बुद्धि या विवेक ने किसी नए तथ्य का दर्शन किया हो — अर्थात् जो अपनी मौलिक खोज-शक्ति से कुछ नया आविष्कार करे, चाहे वह भौतिक, ज्ञान-संबंधी या परहित की प्रेरणा से हो।

प्रश्न 4

न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

हल

न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के तर्क—
न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। यह एक मौलिक खोज थी — उनकी बुद्धि और विवेक ने एक नए तथ्य का दर्शन किया। लेखक के अनुसार: 'न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था।' न्यूटन में वह योग्यता और प्रेरणा थी जिसके बल पर उन्होंने पहले-पहल एक नई सच्चाई खोजी।
बाद के ज्ञानी संस्कृत क्यों नहीं—
आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण का तो ज्ञान है ही, साथ ही उसे और भी अनेक बातों

का ज्ञान है जिनसे शायद न्यूटन स्वयं अपरिचित रहे।
इतना अधिक जानने के बावजूद वह विद्यार्थी न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कहलाए — किंतु न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कहला सकता। कारण यह है कि उसे यह ज्ञान अपने पूर्वजों से अनायास ही मिल गया; उसने स्वयं कोई मौलिक खोज नहीं की। वह सभ्यता का उपभोक्ता है, संस्कृति का सृजक नहीं।

उत्तर: न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का मौलिक आविष्कार किया — यही उनके संस्कृत होने का तर्क है। बाद के विद्यार्थी अधिक जानकारी रखते हुए भी संस्कृत नहीं कहला सकते क्योंकि उन्हें यह ज्ञान पूर्वजों से अनायास मिला, उन्होंने स्वयं कोई मौलिक खोज नहीं की।

प्रश्न 5

किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

हल

लेखक के अनुसार सुई-धागे के आविष्कार की प्रेरणाएँ—
1. शीत और उष्णता से बचाव: लेखक स्पष्ट लिखते हैं — 'सुई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने... की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा।' ठंड और गर्मी से शरीर को बचाने के लिए कपड़े सिलने की आवश्यकता पड़ी होगी।
2. शरीर को सजाने की प्रवृत्ति: लेखक यह भी कहते हैं — '...तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा।' मानव में सौंदर्य-बोध और श्रृंगार की स्वाभाविक इच्छा भी सुई-धागे की खोज का एक कारण बनी होगी।
3. कपड़े के टुकड़ों को जोड़ने की व्यावहारिक जरूरत: लोहे के एक टुकड़े को घिसकर, उसके सिरे में छेद करके और धागा पिरोकर कपड़े के दो टुकड़े एक साथ जोड़ने की सोच से सुई-धागे का आविष्कार हुआ। यह एक व्यावहारिक आवश्यकता थी।

उत्तर: सुई-धागे का आविष्कार मुख्यतः शीतोष्ण (ठंड-गर्मी) से शरीर को बचाने और शरीर को सजाने की प्रवृत्ति की पूर्ति के लिए हुआ होगा — यही लेखक के दो मुख्य कारण हैं।

प्रश्न 6

'मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।' किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब— (क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं। (ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

हल

(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ—
1. धार्मिक आधार पर विभाजन: लोगों ने संस्कृति को 'हिंदू संस्कृति', 'मुसलिम संस्कृति', 'ईसाई संस्कृति' आदि खानों में बाँटने की कोशिश की। लेखक कहते हैं कि ऐसे संस्कृति का बँटवारा करने वाले लोगों पर उन्हें आश्चर्य और दुख दोनों होते हैं।
2. भौतिक और आध्यात्मिक संस्कृति का विभाजन: लोगों ने 'भौतिक-सभ्यता' और 'आध्यात्मिक-सभ्यता' जैसे विशेषणों के जरिए संस्कृति को अलग-अलग खानों में बाँटने का प्रयास किया जिससे इसका वास्तविक अर्थ ही भ्रमित हो गया।

(ख) मानव संस्कृति के एक होने के प्रमाण—

1. परहित की भावना — सार्वभौमिक है: जब कोई माँ रोगी बच्चे को सारी रात गोद में लिए बैठी रहती है, जब लेनिन अपनी डेस्क की रोटी खुद न खाकर दूसरों को खिला देता है, जब कार्ल मार्क्स मजदूरों की सुख की कामना में अपना सारा जीवन दुख में बिता देता है — ये सब एक ही मानवीय संस्कृति के प्रमाण हैं जो किसी एक धर्म या जाति की नहीं।

2. सिद्धार्थ का त्याग — सर्वमानव के लिए: ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर इसलिए त्यागा ताकि 'तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके।' यह त्याग किसी एक वर्ग या संस्कृति के लिए नहीं, समस्त मानवता के लिए था — जो मानव संस्कृति की एकता का प्रमाण है।

उत्तर: (क) धार्मिक आधार पर 'हिंदू-मुसलिम संस्कृति' जैसे विभाजन और 'भौतिक-आध्यात्मिक' जैसे विशेषणों से संस्कृति को बाँटने की चेष्टाएँ। (ख) माँ का परहित, लेनिन-मार्क्स का सर्वस्व त्याग, और सिद्धार्थ का संपूर्ण मानवता के लिए गृहत्याग — ये मानव संस्कृति की एकता के प्रमाण हैं।

प्रश्न 7

आशय स्पष्ट कीजिए— (क) मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?

हल

आशय—

लेखक यहाँ एक गहरा प्रश्न उठाते हैं। मानव ने अपनी बौद्धिक योग्यता से अनेक आविष्कार किए हैं, जिनमें आत्म-विनाश के साधन भी शामिल हैं — जैसे परमाणु बम, विनाशकारी हथियार आदि।

यदि 'संस्कृति' उस योग्यता का नाम है जिससे नई खोज होती है, तो आत्म-विनाश के साधन बनाने की योग्यता को भी संस्कृति कहना पड़ेगा। परंतु लेखक इसे 'असंस्कृति' मानते हैं।

लेखक का स्पष्ट मत है: 'संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?'

अर्थात् जो योग्यता मानव के कल्याण के लिए काम आए वही सच्ची संस्कृति है; आत्म-विनाश के साधन बनाना असंस्कृति है — भले ही उसमें बौद्धिक कुशलता हो। संस्कृति और कल्याण का नाता अनिवार्य है।

उत्तर: लेखक का आशय है कि जो योग्यता आत्म-विनाश के साधन बनाती है वह सच्ची संस्कृति नहीं — क्योंकि संस्कृति का कल्याण की भावना से नाता जरूरी है; कल्याण-रहित योग्यता 'असंस्कृति' है और उसका परिणाम असभ्यता ही होगा।

प्रश्न 8

लेखक ने अपने निष्कर्षों से सभ्यता और संस्कृति को एक परिभाषा दी है; इन सभ्यता और संस्कृति के बारे में वे कहाँ से कहाँ पहुँचते हैं, लिखिए।

हल

प्रारंभिक भ्रम: लेखक मानता है कि 'सभ्यता' और 'संस्कृति' शब्दों का अर्थ प्रायः उलझा हुआ और अस्पष्ट रहता है — लोग इन्हें एक-दूसरे के पर्याय की तरह प्रयोग करते हैं।

संस्कृति की परिभाषा: किसी नए तथ्य या वस्तु का दर्शन/आविष्कार करने वाली योग्यता ही संस्कृति है (जैसे आग और सुई का आविष्कार करने वाले संस्कृत मनुष्य थे)।
सभ्यता की परिभाषा: संस्कृति का परिणाम या उपयोग ही सभ्यता है — हमारा खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार आदि सभ्यता में आते हैं।
अंतिम निष्कर्ष: सच्ची संस्कृति मानव-कल्याण (परहित) की भावना है; संस्कृति को बाँटा नहीं जा सकता — मानव-संस्कृति अविभाज्य और एक है।

उत्तर: लेखक पहले दोनों शब्दों के भ्रम से आरंभ करता है, फिर संस्कृति को 'नए तथ्य का दर्शन करने वाली योग्यता' और सभ्यता को 'उसके परिणाम/उपयोग' के रूप में परिभाषित करता है, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सच्ची संस्कृति परहित (मानव-कल्याण) है और मानव-संस्कृति अविभाज्य है।

प्रश्नावली 11.2 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 9

निम्नलिखित सामासिक पदों का विग्रह करके समास का भेद भी लिखिए— गलत-सलत, आत्म-विनाश, महामानव, पददलित, हिंदू-मुसलिम, यथोचित, सप्तर्षि, सुलोचना

हल

गलत-सलत — विग्रह: गलत और सलत — समास: द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान, 'और' से जुड़े)
आत्म-विनाश — विग्रह: आत्मा का विनाश — समास: तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष; 'का' संबंध कारक)
महामानव — विग्रह: महान है जो मानव — समास: कर्मधारय समास (विशेषण-विशेष्य संबंध)
पददलित — विग्रह: पद से दलित — समास: तत्पुरुष समास (तृतीया तत्पुरुष; 'से' करण कारक)
हिंदू-मुसलिम — विग्रह: हिंदू और मुसलिम — समास: द्वंद्व समास (दोनों पद प्रधान)
यथोचित — विग्रह: उचित के अनुसार — समास: अव्ययीभाव समास (पूर्वपद 'यथ' अव्यय, समूचा पद क्रिया-विशेषण)
सप्तर्षि — विग्रह: सात ऋषियों का समूह — समास: द्विगु समास (पूर्वपद संख्यावाचक 'सप्त')
सुलोचना — विग्रह: सुंदर हैं लोचन जिसके (वह) — समास: बहुव्रीहि समास (दोनों पद मिलकर तीसरे की विशेषता बताते हैं)

उत्तर: गलत-सलत=द्वंद्व; आत्म-विनाश=षष्ठी तत्पुरुष; महामानव=कर्मधारय; पददलित=तृतीया तत्पुरुष; हिंदू-मुसलिम=द्वंद्व; यथोचित=अव्ययीभाव; सप्तर्षि=द्विगु; सुलोचना=बहुव्रीहि।